Sangeet Manthan: Article 6 of N: February, 2013

By Dr. Sudha Patwardhan

Send comments and questions to: reflections@vishnudigambarvidyalaya.com

सायं कालीन संधि प्रकाश राग

यह पहले कहा जा चुका है कि सायं कालीन संधि प्रकाश रागों में उदासी, करुणा और वैराग्य की भावनाएं अधिक मात्रा में होती हैं| इस गुट में पूर्वी एवं मारवा थाट के राग अधिकतर आते हैं| रिषभ का कोमल होना तथा मध्यम का तीव्र रहना ये भी सामान्य तौर से नियम होता है| राग पूरिया, राग पूर्वी, राग मारवा, पूरिया धनाश्री, श्री एवं अन्य कुछ प्रसिद्ध रागों में मध्यम तीव्र है और रिषभ कोमल है| पूर्वी ऐसा राग है जिसमें दोनों मध्यम आते हैं| अब हम कुछ प्रमुख संधि प्रकाश रागों का विवरण देखेंगे|

१- राग पूरिया--इसे मारवा थाट के अंतर्गत माना जाता है| अंग के हिसाब से देखें तो पं. खरे जी ने इसे मारवा अंग के अंतर्गत माना है, किन्तु पूरिया का अपना प्रबल अंग होने से इसे पूरिया अंग का राग माना जाता है| इस राग में मंद्र सप्तक की प्रबलता रहती है| पंचम वर्जित होने से राग की जाति षाडव है| गंधार वादी और निषाद संवादी हैं| निषाद व मध्यम की जोड़ी भी प्रबल रहती है| म में नि का कण,ग में ध का कण, साथ ही ग में म का कण और नि में म का कण यह इस राग की विशेषता है,राग का चलन वक्र ही रहता है और तानों में भी जहाँ तक हो सके वक्र रूप ही रखना इष्ट है|सानिध म यह संगति न लेकर रेनिधम यह संगति ही ली जाती है| क्योंकि सीधे सानिधम लेने से राग का स्वरूप बिगड कर सोहनी बनने की संभावना होती है|गान समय सायं काल है, किन्तु कुछ गुणी जन रात्रि का द्वितीय प्रहर मानते हैं| वैसे आम तौर पर शाम को ही इसे गाया जाता है| कोमल धैवत लगाकर भी पूरिया गाते हैं जिसे "दिन की पूरिया" कहा जाता है| वह भी शाम को ही गाया जाता है|

२- पूर्वी--यह पूर्वी थाट का आश्रय राग है|इसमें रिषभ व धैवत कोमल और दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं|आरोह में पंचम वर्जित है तथा अवरोह सम्पूर्ण है,अत:राग-जाति षाडव-सम्पूर्ण है| इस राग में यद्यपि दोनों मध्यम आते हैं,थाट पूर्वी में केवल तीव्र मध्यम ही आता है|वादी गंधार और संवादी निषाद है|निकट तम राग पूरिया धनाश्री से बचने के लिए गंधार की प्रबलता को दिखाते रहना आवश्यक है| पूरिया धनाश्री में पंचम प्रबल होता है| अत:इसे गाते समय पंचम को कम रखना उचित है| 'प [तीव्र] म ग म गरेमग ' यह स्वर समूह बार बार लेते रहना चाहिए,ऐसा करने से अन्य निकटवर्ती रागों से जैसे मारवा,श्री,पूरियाधानाश्री से पूर्वी की विशेषता प्रगट होती है| पूर्वी में तीव्र म अधिक और शुध्द म कम रहता है,किन्तु दोनों मध्यम ललित की तरह लगातार एक के बाद दूसरा इस प्रकार कभी भी नहीं लेने चाहिए|गान समय दिन का चौथा प्रहर है,बहुत बार गमग इस स्वरावली को शुद्ध मध्यम लगाकर लेते ही लोग पहचान लेते हैं कि अब कलाकार पूर्वी की अवतारणा करेगा|

३- मारवा--यह मारवा थाट का आश्रय राग है| रिषभ कोमल और मध्यम तीव्र लगता है|धैवत शुध्द होता है| इस राग में षड्ज की प्रधानता न होकर रिषभ का महत्त्व अधिक होता है|साथ ही पंचम न होने से नए विद्यार्थी को आधार के बिना खड़े रहने की स्थिति प्रतीत होती है, क्योंकि सामान्य रूप से सा प दोनों आधार स्तंभ होते हैं जो कि इस राग में नहीं मिलते--पंचम वर्जित होने से और षड्ज कम महत्त्व पूर्ण होने से| अत:नए विद्यार्थी को बेसुरे होने का डर लगा रहता है|साथ-साथ इस राग में एक उदासी की छटा बनी रहती है| बहुत देर तक कोमल रिषभ पर न्यास करने के उपरान्त षड्ज पर आने के कारण कुछ बेचैनी का अहसास भी होता है| कई बार तो गाना सुनते समय रिषभ का बहुत न्यास होने के उपरांत जब कलाकार तार षड्ज लगाता है तो जैसे चैन कई साँस ले ली हो ऐसा प्रतीत होता है|मारवा में स्वर मृदु न लगाकर खड़ा लगाव रहता है| निकटतम राग पूरिया भी मारवा के समान षाडव राग है, किन्तु उसके वादी-संवादी ग नी हैं तथा लगाव का भी अंतर है| मारवा में रिषभ -धैवत प्रबल हैं| अत:भिन्नता स्पष्ट हो जाती है|सायंकालीन संधिप्रकाश राग होने से संध्या ही गान समय है, किन्तु कल्याण से पहले अर्थात दिन के अंतिम प्रहर में गाते हैं|इस प्रकार से यह परमल प्रवेशक राग माना जाता है| ग को अधिक नहीं बढाया जाता ,क्यों कि ऐसा करने से पूरिया की छटा परिलक्षित होने लगती है| मारवा के पूर्वांग में रिषभ पर और उत्तरांग में धैवत पर न्यास होता है| आजकल इसे पूर्वांग प्रधान माना जाता है,किन्तु पूर्व काल में इसे उत्तरांग प्रधान और पूरिया को पूर्वांग प्रधान माना जाता था|

४- पूरिया धनाश्री- सायं कालीन रागों में लोकप्रिय राग पूरिया धनाश्री पूर्वी थाट का राग है,पूर्वी अंग से गाया जाता है| रे,ध कोमल मध्यम तीव्र है| ध प म ग[जल्दी से लेकर] म रे ग ऐसे स्वर गाते ही राग समझ में आ जाता है|ऐसे ही स्वरों से आलाप की समाप्ति की जाती है| प सा वादी-संवादी हैं और ग न्यास का स्वर माना गया है|आरोह,अवरोह वक्र होते हैं जिससे श्री,गौरी आदि रागों से बचा जा सकता है| पूर्वी समीपवर्ती राग है किन्तु उसमे दोनों मध्यम हैं अत:भिन्नता समझ में आ जाती है|

संधि प्रकाश रागों कि विशेषता है--रिषभ का कोमल होना गंधार का शुद्ध होना| पूर्वी,पूरिया तथा पूरियाधानाश्री में ये विशेषता देखी जा सकती है,साथ ही इं तीनों रागों में धैवत भी कोमल था| किन्तु मारवा पर मेल प्रवेशक होने से अगले प्रहर के शुद्ध धैवत का प्रयोग उसमे होता है ।
आगे कुछ और तथ्यों के साथ मिलेंगे, नमस्कार|

English Translation

Evening Twilight Raagas

As we have seen earlier, in twilight raagas, there is more of a melancholy, yearning and reclusive feeling.

In this group, the raagas of thaat ‘Poorvi’ and ‘Marava’ are mostly included. Generally, being Rishabh komal and Madhyam tivra is a common rule of this category of raagas.

Raag Pooriya, Raag Poorvi, Raag Marava, Pooriya Dhanashri, Shri and some other famous raagas contain tivra madhyam and komal Rishabh. Poorvi is the raag which is having both madhyams. Now, we will consider the description of some main twilight raagas in detail.

1- Raag Pooriya – This is categorized under Thaat Marava. Considering ang (shade) , Pt. Khare has included it under Thaat Marava, but 'Pooriya's ang itself is strong therefore, it is considered as the raag of 'Pooriya' ang. In this raag, mandra saptak is prominent. Being 'Pancham' varjit, jaati of the raag is 'Shaadav'. Gandhar is Vaadi and nishaad is Sanvaadi. The combination of 'nishaad' and 'madhyam' is also prominent. 'Ni' acts as a support swar for 'M' (kan swar), 'Dha' for 'Ga', with that 'Ma' for 'Ga' and 'Ma' for 'Ni'. This is the specialty of this raag, the chalan of the raag is vakra and in tans also one should keep vakra form (swaroop) as far as possible. 'R N D M' is the combination which is sung in this raag instead of 'S N D M', because simply singing S N D M combination, disturbs the form (swaroop) of the raag and there is a high chance of transition between this raag and 'Raag Sohani'. Gaansamay (timing) of this raag is evening, but some musicians consider its samay as 'second Prahar'. Usually, this raag is sung in the evening. Raag 'Pooriya' is also sung including 'komal Dhaivat' which is called as 'Din ki Pooriya'. It is also sung in the evening.

2. Raag Poorvi – This raag is 'ashray raag' or 'janak raag' (generator) of this that. In this, Rishabh and Dhaivat both are komal and both the Madhyams are included. Pancham is varjit in aaroh and, avaroh is 'sampoorna' therefore, jaati is 'Shadav-sampoorna. Though this raag includes both madhyams, thaat Poorvi has only tivra madhyam. Vaadi is gandhaar and sanvaadi is nishaad. To avoid the confusion between this raag and Pooriya Dhanaashri, which is very close to it, one has to show the dominence of Gandhaar while singing this raag. In raag Pooriya Dhanaashri, pancham is prominent. Therefore, while singing this raag (raag Poorvi), one should sing pancham . 'P tivraM G M GRMG' this combination should be sung more frequently, which is a special feature of raag 'Poorvi' that differentiates raag Poorvi from other similar raagas like 'Marava', 'Shri', 'Pooriya Dhanaashri'. In raag Poorvi, tivra M is more prominent than 'Shuddha M', but both 'M' should never be sung one after the other like in raag 'Lalit'. Gaan samay is 4^{th} prahar of day, usually, as soon as the performer starts his/her performance with 'GMG' swar combination with Shuddha M, the audience can very well recognize that he/she is performing 'raag Poorvi'.

3. Raag Marava – This is 'Ashray raag' or Janak raag (producer) of thaat Marava. Rishabh is komal and madhyam is tivra. Dhaivat is Shuddha. In this raag, Rishabh is given more importance than shadaj. Also, Pancham is varjit, so for beginners, it becomes more difficult

as normally, S and P both are supporting pillars which are lost in this raag, being 'Pancham' varjit and 'Shadaj' less dominant. Therefore, beginners find it hard and can go off the swar (besur) in this raag. Also, there is a silhouette of sadness created in this raag. Following Shadaj after resting (nyaas) on komal Rishabh for long time , creates a feeling of nervousness. Many a times, while listening to music, after a long nyaas on komal rishabh, the performer sings taar Shadaj, which gives a feeling of relaxation. In raag Marava, swars are not expressed gently, but performed strongly (khada lagav). Raag Pooriya is also 'Shadav' raag which is close to raag Marava, but its vaadi-sanvaadi are Ga and Ni and also the appearance or adhesion is different. In raag Marava, Rishabh and Dhaivat are dominating, so it stands out distinctly. As this is evening twilight raag, gansamay is evening, but it is performed ahead of raag Kalyan which is sung in the last prahar of day. Thus it is called 'Paramelpraveshak raag'. 'G' is not given more importance because that way, one can feel the shadow of 'Pooriya'. In raag Marava, nyaas is on rishabh in poorvang (first half) and on dhaivat in uttarang (next half). Now-a-days, raag Marava is considered as 'poorvangpradhan' (first half dominating), but in ancient times it was considered as 'uttarangpradhan(last half dominating)' and raag 'Pooriya' was considered as 'poorvangpradhan'.

4. Raag Pooriya Dhanashri – In evening raagas, most popular raag is 'Pooriya Dhanaashri'. It falls under thaat 'Poorvi', it is sung by 'Poorvi' ang. Re and dha are komal and m is tivra. The clear picture of the raag is identified by singing D P M G (in speed) followed by M R(komal) G. Alaaps are ended with the same swar combination. P and S are vaadi and sanvaadi respectively and ga is nyaas swar. Aaroh and avaroh being vakra, it can be differentiated from other raagas like Shri, Gauri. Poorvi is one of the closest raagas, but as it contains both M, that helps in differentiating both the raagas.

Rishabh komal and gandhar shuddha is the specialty of twilight raagas. One can see these features in 'Poorvi', 'Pooriya' and 'Pooriyaa Dhanaashri'. Also Dhaivat is komal in all these 3 raagas. However, as Marava is 'paramelpraveshak' , application of Shuddha Dha of next Prahar is done in it.

Well, we'll introduce you to some more facts in next article. Thank you.